Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

Volume - 1

शिव-तत्त्व-विचार ।

Dr. Vimla S Chaudhary

Department of Sanskrit

Assistant professor

Bhaktraj Dada Khachar Arts And Commerce College, Gadhada

Mo. No 9429717221, Email :- drvimlabenschaudhary822024@gmail.com

वो ही जीवोका सृजन, पालन, संहार आदि करते हैं । शिवके कार्यके अनुसार अनेक नाम है वो महादेवीके साथ सगुण होकर जगत् का निर्माण आदि करते है । शिवतत्त्ववेता जीव जब वह सदाशिव स्वरुप मैं ही हूँ, तब वह संसारके सब बन्धनोंसे छूट जाता है। एक ही पुरुष द्वारा रचित भिन्न-भिन्न पुराणोंमें एक ही महत्वपूर्ण विषयोंमें इतना भेद क्यों ? ऋषियोंके कथनमें भेद रहनेपर भी वस्तुतः मूल सिद्धान्तमें कोई खास भेद नहीं है क्योंकि प्रायः सभी जो मनुष्य भगवान् के जिस नाम-रूपका उपासक है, वह उसीको सर्वोपरि, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, विज्ञानानन्द, सम्पूर्ण गुणाधार परमात्मा माने, यही सर्वोत्तम भी है की उपासकके लिए अपने उपास्यदेवसें बढ़कर और कोई है ही नहीं। सब अपने आराध्यकी ब्रह्म' एक ही है, ईश्वरमें भेद करना अर्थात् मनुष्यकी अज्ञानता का प्रदर्शन मात्र है इस का कारण यह है की, 'इस जगत् का मूल तत्त्व एक ही है ।

Paper keywords : ब्रह्म, शिवतत्त्व, महर्षि वेदव्यास द्वारा हर पुराणोमें एक ही देवता या देवीकी प्रधानता का रहस्य, सारे तत्त्वकी एकरूपता ।

Paper Title : शिव-तत्त्व-विचार ।

'जो कल्याण कर्ता, जगत्स्त्रष्टा है, वो 'शिव' है । शिव-तत्त्वका असाधारण स्वभाव है कि, कि, वह जीवोंकें अन्तःकारणोंको कल्याणकी और खींचता है। ' श्वः श्रेयसं शिवं भद्रं कल्याणं मङ्गलं शुभम् ', ' शिवं च मोक्षे क्षेमे च महादेवे सुखे ' इत्यादि के अनुसार अद्वैत, कल्याण आनन्द – ये सारे शब्द 'शिव' अर्थ के बोधक है । सारा संसार 'कल्याण' और 'आनन्द' के लिये लिये ही प्रवृत हो रहा है । 'श्वेताश्वतरोपनिषद्' के प्रारम्भमें ब्रह्मके सम्बन्धमें जिज्ञासा की है,

'किं कारणं ब्रह्म' ।[१] स्मृतिमें आगे चलकर 'ब्रह्म' के स्थान पर 'रुद्र' और 'शिव' शब्दका प्रयोग किया है –

'एको हि रुद्रो न द्वितीयाय तस्थुर्य ईमाँल्लोकानीशत ईशनीभिः ।

प्रत्यङ्जनांस्तिष्ठति संचुकोचान्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः ॥'[२]

अर्थात्, जो अपनी शासन-शक्तियोंके द्वारा लोकों पर शासन करतें है, वे रुद्र एक ही । इसलिये विद्वानोंने जगत् के कारणके रूपमें किसी अन्यका आश्रयण नहीं किया है । वे प्रत्येक जीवके भीतर स्थित है, समस्त जीवोका निर्माणकर, पालन करते है तथा प्रलयमें सबको समेट भी लेते है । शिव और रूद्र 'ब्रह्म' के पर्यायवाची शब्द है । शिव को रूद्र इस लिए लिए कहा जाता है क्योंकि 'रुत्' अर्थात् 'दु:खम्, द्रावयति अर्थात् नशायतीति रुद्रः' । शिवतत्त्व तो एक ही है - 'एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म'[३] उस अद्वय-तत्वके अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं - 'एकमेव सत् । नेह नानास्ति किंचन ।'[४] किन्तु उस अद्वयतत्त्वके नाम अनेक होते है – 'एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्ति ।'[५] अर्थात् उस अद्वयतत्त्वको विद्वान् गण अनेक नामोंसे पुकारते है। सृष्टिके समय चेतनके एकभागरुप कण्ठमें बीजशक्ति मायके रुपमें भासती है और प्रलयके समय यह माया बीजशक्तिके रुपमें रहती है । इस अभिप्रायसे रुद्र 'नीलकण्ठ' और 'श्वेतकण्ठ' है । सत्-चित् और आनन्दके स्वरुप में अद्वैतानुभव ही स्वयं का अनुभव है । तीनों गुणोंसे अतीत, अद्वैतरुपमें सृष्टिसे भी परे, परमङ्गमय शिव है, शिव का ये स्वरुप निर्गुण ब्रह्मपद स्वरुप है । सदाशिवरुपी महादेवका महादेवी - आलिङ्गित जो स्वरुप है वही सगुण ब्रह्मका स्वरुप है । सगुणरुपमें गुणमयी ब्रह्मशक्ति ब्रह्मरुपसें अलग होकर महादेव के साथ रहकर जगत-प्रपञ्चकी सृष्टि, स्थिति और लय करती है । महादेवी हीं ब्रह्ममयी प्रकृति ही निर्गुण ब्रह्मको सगुण बनाने का कारण होती है । पुराणो में निर्गुण ब्रह्मको सगुण ब्रह्मके स्वानुभवका जो भी रहस्य है वह इसी विचारकी पृष्टि करता है। पुराणों में शिव और शिवा के संयोग- वियोग, जन्म- विवाह, लीला- विहार आदि सुन्दर चरित्रोंका वर्णन अधिक पाया जाता है है । शिव सदा ज्ञान प्रदाता होने के कारण मात्र देवताओं के ही नहीं अपितु ऋषि-मुनिओं के अधिनायक है । वो आगम के प्रणेता और निगमकें स्मारक महर्षियों के नेतारुप है इस लिये सदाशिवको विचारोमें, जीवनमें जो उतारते है उनके लिये शिव सदा 'मुक्तिदाता' कहना उपयुक्त है । अनेक शास्त्र के आदिगुरु शिव ही है । शिव- शक्तिका योग यथार्थ योग है । मन्त्रयोगमें बहि: प्रकृति तथा अन्तः प्रकृति नाम और रूप योगसे समाधिरूप शिवतत्त्वकी प्राप्ति होती है । सभी चराचर जगत एवं अपने आपको श्रीसदाशिवमें विराजमान जानकार विद्वान शिवरुप हो

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

जाते है । शिवतत्त्ववेता जीव जब यह जान लेता है कि - जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्ति आदि प्रपञ्चको जो भगवान प्रकाशित कर रहे है वह सदाशिव स्वरुप मैं ही हूँ, तब वह संसारके सब बन्धनोंसे छूट जाता है । 'शिङ् स्वप्ने' धातुसे 'शिव' शब्दकी सिद्धि है । 'शेरते प्राणिनो यत्र स शिवः' अर्थात् अनन्त पाप-तापोंसे उद्विग्न होकर विश्रामके लिये प्राणी जहाँ शयन करें, बस उसी सर्वाधिष्ठान, सर्वाश्रयको शिव कहा जाता है । श्रुतिमें ब्रह्मका लक्षण कहा गया है, उसमें उत्पादन, पालन एवं संहारकको परमेश्वर समजना चाहियें । यदि ये तीनों भिन्न है तो कोई परमेश्वर नहीं सिद्ध हो सकता क्योंकि निरतिशय ऐश्वर्य और सर्वज्ञ-गुण-सम्पन्नको परमेश्वर । अतः एकेश्वरवाद मानना पड़ता है । शिवतत्त्व बहुत ही गहन है । श्रुति, स्मृति, पुराण, इतिहास आदिमें सृष्टिकी उत्पत्तिका भिन्न-भिन्न प्रकार का वर्णन मिलता है । इस पर यह कहा कहा जा सकता है कि, भिन्न-भिन्न ऋषियोंके पृथक्- पृथक् मत होनेके कारण उनकें वर्णन में में भेद होना सम्भव है परन्तु पुराण तो अठारहों एक ही महर्षि वेदव्यासके रचे हुए है तो उनमें भी सृष्टिकी उत्पत्तिके वर्णनमें विभिन्नता ही पायी जाती है । शैवपुराणोंमें शिवसें, वैष्णवपुराणोंमें विष्णु, कृष्ण या रामसें और शाक्तपुराणोंमें देवीसे सृष्टिकी उत्पत्ति बतलायी है इसका क्या कारण हो सकता है ? एक ही पुरुष द्वारा रचित भिन्न-भिन्न पुराणोंमें एक ही महत्वपूर्ण विषयोंमें इतना भेद क्यों ? सृष्टिके विषयमें ही नहीं, इतिहासों और कथाओंमें भी पुराणोंमें कहीं-कहीं अत्यन्त भेद पाया जाता है । इस का क्या प्रयोजन हो सकता है ? इस प्रश्न पर मूल-तत्त्वकी और लक्ष्य रखकर विचार करनेपर यह स्पष्ट हो जाता है कि, सृष्टिकी उत्पत्तिके क्रममें भिन्न-भिन्न श्रुति, स्मृति और पुराणोंके वर्णनमें और योग, सांख्य, वेदान्तादि शस्त्रोंके रचयिता ऋषियोंके कथनमें भेद रहने पर भी वस्तुतः 'मूल सिद्धान्तमें कोई खास भेद नहीं है' क्योंकि प्रायः सभी कोई नाम-रुप बदलकर आदिमें प्रकृति-पुरुषसे ही सृष्टिकी उत्पत्ति बतलाते है । पुराणोंके रचनाकार 'महर्षि वेदव्यासजी' बड़े तत्त्वदर्शी विद्वान् और सृष्टिके समस्त रहस्य जाननेवाले विद्वान् थे । वेदव्यासने देखा कि, 'वेद-शस्त्रोंमें ब्रह्मा, विष्णु, महेश, शक्ति आदि ब्रह्मकें अनेक नामोंका वर्णन है', इस का वास्तविक रहस्योंको न समजनेवालें मनुष्य भिन्न-भिन्न नाम-रुपवाले एक ही परमात्माको अपनी-अपनी बुद्धिकी विचित्रताके कारण अनेक मानने लगे है और अनेक मतोंका विस्तार होनेसे असली तत्त्वका लक्ष्य छूट गया है । इस अवस्थामें महर्षि वेदव्यासजी सबको एक ही परम लक्ष्यकी ओर मोड़कर सर्वोत्तम मार्गपर लानेके लिये एवं श्रुति, स्मृति आदिका रहस्य सब मनुष्योंको समझानेके लिये उन सब जीवोंके हितके लियें 'पुराणोंकी' रचना की । महर्षि वेदव्यासजी पुराणोंमें इस प्रकारके वर्णन और उपदेश उपदेश किये है, जिनकें प्रभावसे मनुष्य परमेश्वरके नाना प्रकारकें रूपोंको देखकर भी मोह, लोभ, क्रोध, प्रमादके वशीभूत होकर सन्मार्गका त्याग कर अन्य मार्ग का अनुसरण नहीं कर

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

सकता । परमात्माका किसी भी नाम-रूपसे उपासना करते हुए सन्मार्ग पर ही आरुढ़ हो सकेता है । जीवों पर महर्षि वेदव्यासजीकी परम कृपाके कारण जनसमुदायको एक ही सूत्रमें बाँधकर उन्हें सन्मार्गपर लगा देनेके उद्देश्यसे ही वेदोक्त ईश्वरके स्वरूपको बताया है । जो मनुष्य भगवान् के जिस नाम-रूपका उपासक है, वह उसीको सर्वोपरि, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापी, विज्ञानानन्द, सम्पूर्ण गुणाधार परमात्मा माने । यही सर्वोत्तम भी है की उपासक अपने उपास्यदेवसें बढ़कर और कोई है ही नहीं । सब अपने आराध्यकी विभूति या फिर लीला का विस्तार है । एक ही आकाशमें सूर्य भिन्न-भिन्न रंगोंके चश्में सें भिन्न रंगका आकाश दिखाई देता है वैसे ही विष्णु भावनासे भावित अन्त:करणवाला उपासक परमतत्त्वको 'विष्णु' कहता है, शिवभावनासे पूर्ण मनस्क उसी परमतत्त्वको 'शिव' कहते है, वैसे ही श्रीराम, कृष्ण आदि रूपमें दिखाई देता है । आकाशमें सूर्यस्थानीय परमतत्त्व 'शिवपुराण' आदिमें 'शिव', 'विष्णुपुराण' आदिमें 'विष्णु' देवीपुराणों में 'देवी' को महत्वपूर्ण माना है । भक्तकी भावना ही उस परमतत्त्वकी ही विशुद्धसत्त्वमयी दिव्य शक्तिके योगसे मधुर मनोहर मूर्ति भी व्यक्त । समुद्रसे ही तरङ्गकी उत्पत्ति, समुद्रसे ही उसका पालन अन्तमें फिर उसी समुद्रमें ही संहार होता है । इस प्रकार उत्पादनावस्थाके नियामक ब्रह्मा, पालानावस्थाके नियामक विष्णु और संहारावस्था एवं कारणावस्थाके नियामक शिव है । कारणवस्था पूर्व भी होती है, अन्तमें भी होती है । इस लिए आरंभ और अन्तमें भी 'शिवतत्त्व' शेष रहेता है ।

शिवकी शिवारुप भगवती पार्वती जब शिवकी तपस्यामें लीन थी तब उनके प्रेमकी परीक्षाके लिए स्वयं शिव ब्रह्मचारीका वेष बनाकर उनके सामने स्वयंकी बहोत निन्दाकी थी, शंकर तो इतने दरिद्र है कि, उसे वस्त्रतक पहननेको नहीं मिलता, इसलिये वो 'दिगम्बर' कहलाता है । 'वह स्मशानवासी है, उनका रूपभी भयंकर है' इत्यादि अनेक दोष स्वयं ही बताये थे, उस समय पार्वती का उत्तर महाकवि कालिदासने कुमारसम्भवम् में अङ्कित किया है ।

' अकिञ्चनः सन् प्रभवः स सम्पदां त्रिलोकनाथः पितृसद्मगोचरः ।

स भीमरुपः शिव इत्युदीर्यते न सन्ति याथार्थ्यविदः पिनाकिनः ॥'[६]

अर्थात् शिव परम दरिद्र होकर भी सब सम्पत्तियोंके उद्गमस्थान है, सब सम्पत्तियों वहींसे प्रकट होती है, वे श्मशानवासी होकर भी तीनों लोकोंके नाथ है, भयानक रुपमें रहनेपर भी उसका नाम 'शिव' है, सत्य तो यह है कि पिनाकधारी भोलानाथका यथार्थ तत्त्व कोई जान ही नहीं पाया, वे क्या है और कैसे है – यह तत्त्व कोई नहीं जानता । यह परमशक्ति भगवती पार्वतीकी राय है ।

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⊛⊛⊛⊛ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

महाभारत में जब महाराज युधिष्ठिरने परमतत्त्वज्ञ भीष्मपितामहसे नीति, धर्म और मोक्षके सूक्ष्म रहस्यका विवेचन सुनते हुए जब शिव-महिमाके सम्बन्धमें प्रश्न किया तो पितामहने उत्तर दिया था की – 'अशक्तोऽहं गुणान् वक्तुं महादेवस्य धीमतः ।

यो हि सर्वगतो देवो न च सर्वत्र दृश्यते ॥'[७]

अर्थात् जो सबमें रहते हुए भी कहीं किसीको दिखायी नहीं देते, उन महादेवके गुणोंका वर्णन करनेमें सर्वथा असमर्थ हूँ । 'मैं असमर्थ हूँ' इतना ही कहकर भीष्मपितामह को सन्तोष नहीं हुआ, किन्तु साथ ही उन्होंने यह भी स्पष्ट कह दिया कि मनुष्य देहधारी कोई भी महादेवकी महिमा नहीं कह सकता । निराश युधिष्ठिरको देखकर भीष्मपितामहने धैर्य दिलाते हुए कहा की सभामें साक्षात् विष्णुके अवतार भगवान् श्रीकृष्ण उपस्थिति है, वे शिवकी महिमा कह सकते है ।

ईश्वरका निरूपण वैदिक सिद्धान्तमें दो प्रकारके भावोंसे है – व्यापकरूपसें अर्थात् एक वैज्ञानिक भावसें, दूसरा उपासनाभावसें अर्थात् मनुष्यरूपमें । वैज्ञानिक रूपकी भी मनुष्याकारकी कल्पना होती है और अवताररूपसे मनुष्याकारधारी भी ईश्वर होता है । व्यापकरूपमें ईश्वरका जगत् के साथ छ प्रकारका सम्बन्ध शास्त्रोमें बताया जाता है । जगति ईश्वरः । ईश्वरे जगत् । जगद् ईश्वर एव । जगद् ईश्वरश्च भिन्नौ । ईश्वरो जगतोतिरिच्यते, जगत्तु ईश्वरान्नातिरिच्यते । ईश्वराद् भेदेन अभेदेन वा अनिर्वचनीयं जगत् । (जगत् में ईश्वर । ईश्वरमें जगत् है । जगत् ईश्वर ही है । जगत् और ईश्वर भिन्न-भिन्न है - ईश्वर भिन्न-भिन्न है - ईश्वर जगत् से परे है । ईश्वर जगत् से भिन्न है, किन्तु जगत् ईश्वरसे भिन्न नही । जगत् अनिर्वचनीय है, भिन्न वा अभिन्न कुछ भी नहीं कहा जा सकता)[८] ये सम्बन्ध देखनेमें देखनेमें पर उपादानकारणके साथ कार्यके छहों प्रकारके सम्बन्ध व्यवहारमें आते हुए प्रतित होते है । विश्वको 'सत्य' या 'प्रजापति' भी कहते है । उसमें तीन भाग है - आत्मा, प्राण और प्रजा या पशु । शैवदर्शनोंमें इन तत्त्वोंको 'पशुपति', 'पाश', 'पशु' कहा जाता है । इस परिभाषा भिन्न-भिन्न होने पर भी मूलतत्त्व सब जगह एक ही रहते है । कार्य-जगत् या जगत् जगत् का बाह्यरुप 'पशु' नामसे कहा जाता है । जीवभावमें रहता हुआ जीव भी 'पशु' श्रेणीमें ही आता है । इन सब का नियमन करनेवाला वा उत्पन्न करनेवाला, सबका स्वामी, सबका वशमें रखता है, उसे 'प्राण' 'प्रकृति' कहे जाते है । यें पाश - प्रकृति, प्रजा या पशु आत्मासे विपरीत नहीं है ये तीनोंकी समष्टिका भी पशुपति नामसे निर्दिशित होता है । ये आत्मा, प्राण

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⊛⊛⊛⊛ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

आदि जो शब्द है वो सापेक्ष होनेकें कारण व्यवहारमें अपेक्षाकृत आते है । किसीकी दृष्टिसे जो 'आत्मा' है वो ही दूसरोकी दृष्टिसे 'प्राण' है । किसीकी दृष्टिमें पशु है तो दुसरे की दृष्टिमें वो आत्मा भी हो सकता है । इस सें यें सिद्ध होता है की 'इस जगत् का मूल तत्त्व एक ही है सबका आत्मा जो है वो ही परमात्मा ही है । यह परमात्मा तो निर्विकार होनेके कारण जगत् का कारण कैसे बन सकता है? इसलिये जो मुख्य या आत्मभूत 'शक्ति' सृष्टि, स्थिति, प्रलय आदिकी कारणरूपसे मानी जाती है, वह 'शक्ति' या 'बल' है वह तो प्राणरूप है और इससे आगे उत्पन्न होनेवाले पुरुष, प्रकृति सब 'पशु' है । यह निर्वशष, क्षर, अक्षर, अव्यय इन तीनों पुरुषोंसे भी जो पर है उनका भी आत्मा है, वो आत्माका मुख्य रूप है वो ही - 'परमशिव' है । शिव' परम कल्याण, परम मंगल कर्ता है इस आनन्ददाता, परमकल्याणकर्ता शिव' को ही 'शंकर' कहा जाता है । जो आनन्द करता है वही 'शंकर' है । विष-अमृत दोनों ही ईश्वरकें शरीरमें होते है । किन्तु यह विषको गुप्त रखते है और शंकर जीवकें कल्याणकें लिए अमृतको प्रगट करते है । जो ईश्वरके उपासक जगत् को ईश्वररूप देखते है इनकी अमृत ही आता है, विष विलीन हो जाता है इस लिए शंकरकी मूर्तिमें विष गलेके भीतर है और और चन्द्रमारूप अमृत स्पष्टरूपसें उनके मस्तक पर विराजमान है । इस ब्रह्माण्डमें जो भी हमें विरुद्ध दिखाई देते है वास्तवमें वो विरुद्ध हो ही नहीं सकते क्योंकि विरुद्ध धर्मोको भी ब्रह्माण्डमें ही रहना है, बाहर कहा जा सकता है? क्योंकि यह ब्रह्माण्ड ईश्वररूप ही है तो फिर 'विरुद्धधर्म' कैसा? शिवकी अष्टमूर्ति शर्व, भव, रूद्र, उग्र, भीम, पशुपति, ईशान, महादेव ये आठ मूर्तियाँ उनकी प्रसिद्ध है । भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश, क्षेत्रज्ञ, सूर्य, चन्द्रमा - ये शिव के शर्व आदि आठ रूपों से अधिष्ठित है ।[९] इस अष्टमूर्तिमें अग्नि भी है, जल भी है, सूर्यका तेज भी है चन्द्रमा की शीतलता भी है फिर भी किसी का कोई परस्पर विरोध नहीं है । । इस भावका महाकवि कालिदासने 'कुमारसम्भवम्' में बड़े सुन्दर शब्दोंमें चित्रित किया है ।

विभूषणोद्भासि भुजङ्गभोगि वा गजाजिनालम्बि दुकूलधारी वा ।

कपालि वा स्यादथ वेन्दुशेखरं न विश्वमूर्तेरवधार्यते वपुः ॥[१०]

अर्थात् वह शरीर भूषणोंसे भूषित भी है और सर्प-शरीरोंसे वेष्टित भी । गजचर्म भी ओढ़े हुए है और सुन्दर-सुन्दर बहुमूल्य वस्त्रधारी भी हो सकता है । वह शरीर कपालपाणि भी है और चन्द्रमुकुट भी । जो विश्वमूर्ति ठहरा, उस शरीरका एक रुपसे निश्चय कौन कर सकता है?

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⊛⊛⊛⊛ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

शिव परमतत्त्व है, जो सर्वत्र अनुस्यूत है, सब कारणोंका कारण है । जो 'दिग्म्बर' होते हुए भी भक्तोंको अतुल ऐश्वर्य देनेवाला है, योगिराजाधिराज होते हुए भी अर्द्धनारीश्वर है, सदा पार्वतीसे आलिङ्गित रहते हुए भी मदनजित् है, श्मशानवासी होते हुए भी त्रैलोक्याधिपति है । निर्गुण होते हुए भी गुणाध्याक्ष है, अज है पर अनेक रुपोंसे आविर्भूत हैं । अव्यक्त भी हैं और व्यक्त भी हैं । भस्मविभूषण भी शिव हैं और अनन्त रत्नराशियोंके अधिपति हैं । सबका कारण भी हैं और अकारण भी शिव हैं । वही जगत् के संचालक हैं, वही परात्पर है। श्वेताश्वातर-उपनिषद् में कहा है,

' यदा तमस्तन्न दिवा न रात्रिर्न सन्न चासच्छिव एक केवलः ।

तदक्षरं तत्सवितुर्वरेण्यं प्रज्ञा न तस्मात् प्रसृता पुराणी ॥'[११]

अर्थात् सृष्टिके आदिकालमें जब केवल अन्धकार ही अन्धकार था, न दिन था, न रात्रि थी, न सत् (कारण)था, न असत् (कार्य) था, केवल एक निर्विकार शिव ही विद्यमान थे । वही अक्षर हैं, वही सबके जनक परमेश्वरका प्रार्थनीय स्वरूप है, उन्हींसे शास्त्रविद्या प्रवृत्त हुई है ।

शिवके सूक्ष्मरूपके विषयमें विचार भी उपासना ही है । किसी भी मनुष्यको शैव नाम-रूपसे द्वेष रखकर वैष्णवीय नाम-रूपकी उपासनासे कोई भी लाभ नहीं होता और न वैष्णवीय नाम-रूपसे द्वेष रखकर शैव नाम-रूपकी उपासनासे कोई भी लाभ होता है । शास्त्रोंमें तो इस विष्णु, राम, कृष्ण आदिने शिवकी उपासना की है और शिवजीने विष्णु, राम, कृष्ण आदिकी उपासना की है । वास्तवमें तो कोई भेद ही नहीं हैं, भेद मात्र मनुष्यके अज्ञानता के कारण ही है । मनुष्यको अज्ञानताकें बन्धनोंसे मुक्त होकर द्वेषको दूर करकें अपने भीतर परमेश्वरके प्रति श्रद्धा रखकर अपने दायित्वोंका निर्वाह करना ही यथायोग्य है ।

❋❋❋

पादटीप :-

१. श्वेताश्वतरोपनिषद् :- १/१
२. श्वेताश्वतरोपनिषद् :- ३/२

Shodh Sanchay
Shree Naroda Kelavani Mandal Sanchalit
SMT. A.P. PATEL ARTS & LATE SHREE N.P. PATEL COMMERCE COLLEGE
Shree Prahladbhai Kashidas Patel Vidhya Sankul, Naroda, Ahmedabad-382330.
Reaccredited by NAAC with B Grade Third Cycle | Accredited - by 'AAA'= ⭐⭐⭐⭐ 4 Star
Phone : 079-22816582, M.: 8866388134 E-mail : narodacollage1993@yahoo.com

३. छान्दोग्य-उपनिषद् :- ६/२/१
४. बृहदारण्यक- उपनिषद् : ४/४/१९
५. ऋग्वेद :- १/१६४/४६
६. कुमारसंभवम् :- ५/७७
७. महाभारतम् : अनु. १४/३
८. श्रीशिवाङ्क :- पृ.54
९. शिवमहापुराणम् :- शतरुद्रसंहिता २/३,४
१०. कुमारसम्भवम् :- ५/७८
११. श्वेताश्वतरोपनिषद् :- ४/१८

सन्दर्भग्रन्थाः :-

१. एकादशोपनिषद् :- डॉ. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार,
प्रकाशन :- विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, आवृत्ति, सन् : २०२४
२. श्रीशिवमहापुराणम् :- डॉ. ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, दिल्ली.
३. ऋग्वेद :- महर्षि श्रीमद्दयानन्द सरस्वती,
प्रकाशन-विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली, आवृत्ति, सन् : २०२४
४. कल्याण श्रीशिवाङ्क :- गीताप्रेस, गोरखपुर सं, २०८०
५. महाभारत : गीताप्रेस, गोरखपुर सं, २०७१
६. कुमारसम्भवम् :- डॉ. कुन्दन कुमार,
सारस्वतम् पब्लिकेशन, पटना, बिहार, सं.2021

❋❋❋